INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

WWW.CASIRJ.COM
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

Contents

इस्लाम में नैतिकता 4

Dr. Vikas Khurana Head Deptt of History S.S. (P.G.) College Shahjahanpur. 4

Paddy Cultivation and Land Utilization Problems in Neo Liberal Paradox: A study with special reference to Kuttanad Region in Kerala State 8

Tji P V/ Dr. C R Harilekshmeendra kumar 8

PORTFOLIO CONSTRUCTION : An Empirical study on Indian StockMarket 22

Anil Kumar 22

COMPARATIVE EVALUATION OF PUBLIC & PRIVATE SECTOR MUTUAL FUNDS IN INDIA 30

AASHISH JAIN 30

Agrarian Policy of British East India Company In The Punjab in the later half of 19th Century 37

Dr. Vikram Singh 37

Identity crisis and sense of self in V.S.Naipaul Nobel Lecture 43

Sabzar Ahmad Chopan 43

Leadership Patient Safety Walkrounds 47

Ms. Mary Jyothis Titus 47

Need and Importance of Physical Education in Modern Society. 55

Dileshwar Singh[1] , Dr. Manoj Kumar Pathak[2] 55

Achievement and Constraints of MGNREGA in Sikkim. 58

Karma Loday Tamang[1], Bhuwan Chhetri[2,] Sandhya Devi Thapa[3] 58

Meaning and Concept of Green Banking 65

SARATHKUMAR TS 65

A brief Case Study on flood in Mandakini Valley of Garhwal Himalaya in June 2013 71

PRAMOD KUMAR ANTHWAL 71

Morphological Characterization of Aflatoxin-Producing and Non-Producing Strains of *Aspergillus flavus* 77

Ishwar Singh 77

Ved Pal Singh 77

लघु नाटक : परंपरा और विकास..... 86
डॉ. मनोज कुमार कैन..... 86
Article 93

CASIRJ

इस्लाम में नैतिकता

Dr. Vikas Khurana
Head Deptt of History
S.S. (P.G.) College
Shahjahanpur.

'नैतिकता' शब्द की उत्पत्ति मूलरूप से शब्द 'नीति' से हुई है। 'नीति' का अर्थ 'शाश्वत–आचरण' के सिद्धान्त से है। इस्लाम धर्म अपने विशद स्वरूप में इन सिद्धान्तों की घोषणा करता है जो न केवल मानव के इहँलोक तथा परलौकिक जीवन को सुखद एवं शांतिपूर्ण बनाने में मदद करते है अपितु समाज के अस्तित्व के लिए भी आधारभूत आवश्यकता को स्पष्ट करते है। इन सिद्धान्तों के प्रति उदासीनता का अर्थ अशांत जीवन एवं असुरक्षित विश्व है। दुनिया के तमाम अन्य धर्मो के जैसे ही एक परमशक्ति, सर्वव्यापी–निराकार ब्रहमा अर्थात अल्लाह ही इन सिद्धान्तों का प्रतिपादक है। जिसने समय–समय पर अपने कमोबेश एक लाख पच्चीस हजार नबियो और उनके साथ भेजी अपनी व्रहय (Intutions) को इसका जरिया बनाया।

एक बार जब नबी ससल्लाहु अलैहि वस्सलम से पूछा गया कि ''दुनिया में ऐसी कौन सी शय है, जो इन्सान को सीधा जन्नत में ले जाएगी? आपने इरशाद फरमाया क्षमा और नेक आमाल।

कुर्आन के सूरह अल बकरः के आयात न0 28 से पता चलता है कि अल्लाह ने ही जमीन की सब चीजें पैदा की और सात हमवार आसमान बना दिए। फिर वह फरिश्तों से बोला–

''मैं जमीन में अपना नायब बनाऊँगा।'' फरिश्ते बोले–''क्या तू जमीन में ऐसे को नायब बनाएगा जो जमीन में खून और फसाद फैलाता फिरे''। अल्लाह ने कहा ''जो मैं जानता हूँ, वो तुम नहीं जानते'' और फिर आदम को सब चीजो के नाम बता दिए। फिर फरिश्तो के सामने वो चीजे पेश करके कहा कि ''अगर तुम सच्चे हो तो मुझको इन चीजो के नाम बताओ''। फरिश्ते बोले कि ''तू पाक है और मसलहत पहचानने वाला है। हमें उसके सिवा कुछ मालूम नहीं जो तूने हमें बताया। ''फिर अल्लाह ने हुक्म दिया कि आदम तुम फरिश्तों को इनके नाम बता दो। अल्लाह के हुक्म से आदम ने फरिश्तों को सब चीजो के नाम बता दिए। अल्लाह ने फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के सामने सज्दा करो। सभी फरिश्तों ने सज्दा किया किन्तु इबलीस घमंड में आ गया। अल्लाह ने आदम से कहा तुम और तुम्हारी बीवी दोनों बिहिश्त में रहों, जो चाहे खाओ–पिओ पर इस पेड़ के समीप न भटकना वरना तुम अन्यायियों में से हो जाओगे। शैतान ने उन दोनों को बहकाया और उस ऐश से निकाल कर छोड़ा जिसमें वो थे। हुक्म हुआ तुम दोनो नीचे उतर जाओ। तुममे से बाज–बाज के दुश्मन रहेगें। जमीन में तुम्हारे निश्चित समय तक ठिकाना व साजो–सामान है। फिर जब उसने तौबा कबूल कर ली। हुक्म दिया कि जब कभी मेरी तरफ से तुम्हारे पास हिदायत पहुँचे तो उसकी पैरवी करना।

(आयात 25–38)

दूसरी ओर इबलीस से अल्लाह ने पूछा मेरे हुक्म देने पर भी तुझे सज्दा करने से किसने रोका? ''वह बोला मैं आदम से बेहतर हूँ क्योंकि मुझे, तूने आग से पैदा किया और आदम को मिट्टी से।'' अल्लाह ने फरमाया''तू जन्नत से उतर जा। तेरी हस्ती नहीं कि जन्नत में रहकर घमंड कर सके। सो निकल, बेशक तू जलीलो में से है।'' वह बोला ''जिस दिन लोग खड़े किए जाएगें, उस दिन तक कि मुझे मुहलत दे।'' अल्लाह ने कहा,''तुझको मोहलत दी गई''। इस पर शैतान बोला कि जिस तरह से तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी आदम की संतानों को गुमराह करूगाँ। उन पर आगे से और पीछे से दाँये

से और बाँए से आऊँगा। तू उनमें से ज्यादा को अपना शुक्रगुजार न पाएगा।'' अल्लाह ने कहा कि ''मेरे बन्दो को तू हरर्गिज गुमराह न कर सकेगा और जो वसवसे में पड़कर तेरी पैरवी करेगा, मैं बिलाशक उन्हें तेरे साथ दोजख में डाल दूगाँ।''

(सूरतुल–आऽराफि, आ0न0–27)

उस दिन से अंधेरे और उजाले में नैतिकता–अनैतिकता में जंग जारी है। अल्लाह तबारक तआला अपने बंदों पर रहम करने वाला है। उसने समय–समय पर अपने पैग़म्बरो के जरिए अपने पैग़ाम भेजें ताकि इन्सान उनकों समझ कर नेक आमालो की तरफ रजू हो और दोज़ख की आग में न पड़े। शैतान, इन्सानों का खुला दुश्मन है। कुर्आन पूरी दुनिया के लिए हिदायत है जो अच्छे समाज, नेक अमल इन्सान और खूबसूरत दुनिया को बनाने का पैग़ाम देती है।

कुर्आन की आयतों में नैतिकताः–कुर्आन–उल–मजीद, मानव को दो रस्ते दिखाता है। सूरतुल–बलदि में आया–

''क्या इन्सान इस ख्याल में है, कि उस पर किसी का बस न चलेगा। वह कहता है कि मैने बहुतेरे माल खपा दिए। क्या वह समझता है कि उसे कोई नहीं देखता। क्या हमने उसको दो आँखे नहीं दी, और जबान और दो होंठ नहीं दिए? क्या उसको दो राहे (नेकी–बदी) नहीं दिखाई? लेकिन इन्सान, नेकी की कठिन घाटी में चलने की हिम्मत न कर सका। और ए पैगम्बर तू क्या जाने की कठिन घाटी क्या चीज है?

किसी की गर्दन छुड़ा देना, या भूख के दिनों में खाना खिलाना, अनाथ–नातेदार को। या भूखे मुहताज को खिलाना फिर उन लोगों में होना जो ईमान लाए और सब्र और रहम की नसीहत देते रहे।''

उपरोक्त आयतो के अध्ययन से स्पष्ट है कि कुरान–अल–हाकिम अपने अन्दर नेक आमालो का वह खज़ाना समेटे है जिससे हिदायत ले इन्सान बदी से दूर हो सकता है।

कुर्आन मजीद की बाज आयते जो नैतिकता की हिदायत देती हैः–

1. अल्लाह ही का हैं जो कुछ आसमानों और जो कुछ जमीन में है। ताकि उन लोगों को जिन्होंने बुरे कर्म किए उनके किए का बदला दे और जिन्होंने अच्छे कर्म किए है, उनको अच्छे का बदला दे। (सूरः तुन्नासि, आ0न0 31)
2. हर एक के लिए एक दिशा है जिधर को नमाज में वह अपना मुहँ करता है। (दिशा–भेद की पैरवी न करो) भलाइयों की ओर लपकों बेशक अल्लाह हर शय पर क़ादिर है। (सूरतुल बकरति 2: 148)
3. ऐ ईमानवालो शराब और जुआँ, और पांसे यह सब गन्दे शैतानी काम है। इनसे बचो, शायद तुम्हारा भला हो। (सूरतुल तुन्नासि 90)
4. ऐ नबी कहो कि नापाक और पाक चीजे बराबर नहीं हो सकती। अनार्चे नापाक चीजे तुम्हे अच्छी ही क्यों न लगती हो, तो हे बुद्धिमानों अल्लाह से डरते रहो, शायद तुम्हारा भला हो।''(सुरतुल मा¹सिदति 5 : 100)
5. जो लोग, रात और दिन छिपे और जहिर, अपना माल (अल्लाह की याद में) मिसकीनों पर खर्च करते है। उसका बदला उन्हें उनके पालनकर्ता के यहां से जरूर मिलेगा। (सुरतुल बकराति 2: 274)
6. अल्लाह की राह में खर्च करने वाले माल की मिसाल उस दाने जैसी है, जिससे सात बालियां और हर बाली में 100 दाने जो लोग अपना माल अल्लाह की रह में खर्च करते है फिर खर्च करने के बाद किसी तरह का न एहसान जताते है, न हि उसको चोट पहुँचाते है। उनको उसका सिला उनके पालनकर्ता से ज़रूर मिलेगा। (सुरतुत बकराति 2: 262)
7. नमाज कायम करो, ज़कात देते रहो, पैग़म्बरो को मानो और उनकी मदद करते रहो, तो जरूर तुम्हारे गुनाह तुम से दूर होगें। (सुरतुल मा¹सिदाति 5, 12)

8. जो, अल्लाह के यहां नेकी लेकर आएगा तो उसका दस गुना उसे मिलेगा। जो लाएगा बंदी तो वह उतनी ही सजा भुगतेगा। अल्लाह किसी पर जुल्म नहीं करता। (सुरतुल–अनआमि 168)
9. हरगिज नहीं, बल्कि तुम खुशहाली में भी अनाथ की खातिर नहीं करते। न मुहताजो को खना खिलाने पर बढ़ावा देते हो। और मरे हुओ तक का सब माल समेट कर खा जाते हो। जिस रोज तुम अपने परवरदिगार के सामने होगे उस दिन तुम अपनी भूल को याद करोगें पर उस दिन याद करने से क्या होगा।

(सुरतुल बलदि 90:22–23)

10. और हमने इन्सान को उसके माता–पिता के हक में ताकीद दी कि उसकी माता ने थक–थक कर उसको पेट में रखा और दो बरस में उसका दूध छूटता है। इसलिए मेरे और अपने माँ बाप के शुक्रगुज़ार हो। (सुरह लुक़मान 31:14)

बदअमालो से मनाहीः–

जिस प्रकार कुर्आन नेक अमल करने की हिदायत देता है उसी प्रकार बुरे आमालो से इन्सान को रोकता है–

1. ऐ मेरे बेटे घमण्ड में आकर किसी से बेमुखी न करना और जमीन पर इतरा कर न चल। बेशक अल्लाह इतराने वालो और बड़ाई हाँकने वालो को पसंद नहीं करता। (हकीम सूरह लुक्मान 31:18)
2. कहो कि आओ मैं तुमको वह चीजे सुनाऊँ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम की है। यह है कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक मत ठहराओं, माता–पिता के साथ नेकी करते रहो, गरीबी के कारण अपनी औलाद को न मार डालो, हम ही तुमको रोजी देते है और उनको और बेशर्मी की बातें जो जाहिर हो या छिपी हुई हो उनके पास मत फटकना और जिस जान को अल्लाह ने हराम कर दिया है, उसे कत्ल न करना सिवाय हक के। ये वो बाते है जिनका हुक्म अल्लाह देता है ताकि तुम समझ से काम लो। (सूरतुल अनआमि151:151)
3. और अनाथ के माल के पास मत जाना सिवाय इसके कि उसकी जिस तरह भलाई हो यहां तक किवह बालिग हो जाए। और न्याय के साथ–साथ पूरी तौल करो। और हम किसी शख्स पर उसकी ताकत से बढ़कर बोझा नहीं डालते। और जब बात कहो तो न्याय की चाहे रिश्तेदार ही क्यों न हो। (सूरह अनआमि 6:151)
4. अल्लाह को पसंद नहीं कि कोई बद ज़बानी करें सिवाय उसके जिस पर जुल्म हुआ हो। (सूरहः तुन्निहारि 4:148)
5. बेचने (व्यापार) को अल्लाह ने हलाल किया है और ब्याज को हराम। तो जिसके पास उसके परवरदिगार की तरफ से नसीहत पहुँची और उसने ब्याज खाना छोड़ दिया तो जो सूद पहले ले चुका है, वह उसका हुआ। अल्लाह ब्याज को मिटाता और खैरात को बढ़ाता है। और अल्लाह गुनाहगार को दोस्त नहीं रखता। (सूरह बकराति 2:275–216)
6. ऐ ईमानवालो आपस में एक–दूसरे का माल बेजा मत खाओ। हाँ आपस में रजामंदी से तिजारत करो (उसको नफा हो जाएं तो बेजा नहीं) और आपस में एक दूसरे को कत्ल मत करो, बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है। (सुरह तुन्निसाअि 4:129)
7. और अल्लाह ने जो तुममें से एक की दूसरे के ऊपर बढ़ती दे रखी है उसकी हवस न करो। मर्दो ने जैसे कर्म किये है, उनको उनका भाग और औरतो ने जैसे कर्म किए है उनकी उनका भाग मिलेगा। (सुरह तुन्निसाअि 4:33)
8. ऐ पैगम्बर! ईमानवालो से कहो कि अपनी आँखे नीची रखा करें। और अपनी शर्मगाहो को (बेपरदगी व बुरे कामो) पाक रखे। और लोग जो कुछ भी किया करते है, अल्लाह को उसको पूरी खबर है। (सूरह नूरि 24:30)

9. और ऐ पैग़म्वर ईमानवाली औरतें से कहोकि अपनी नज़रे नीचें रखे और अपनी शर्मगाहों को बचाए रहे और अपना साज–सिंगांर न दिखावे मगर (उन अंगों के सिवाय) जो खुले रहते है (यानि हाथ और पैर वगैरह) (सूरह नूरि 24:31)
10. हर ताना देने वाले और पीठ पीछे ऐब चुनने वाले के लिए बुराई है।

(सूरहःहमजा 32:6)

कुर्रान की उपरोक्त आयतों की रोशनी में तथ्य स्पष्ठ है कि जिन बाज आयतों में अल्लाह नेक अमलो का हुक्म देता है और जिनके जरिए बद अमालो से इन्सान को मना करता है। उनका अनुपालन मानव के मुआशरे के लिए, और पूरी इन्सानिंयत के लिए रहमतों का पैमाना है। कुर्आन के सन्दर्भ में यह धारणा कि उसकी शिक्षा अत्याचार और कठोरता पर आधारित है पूरी तरह से बेबुनियाद है। वस्तुतः कुर्आन मानव की सोच और चरित्र को ऐसी ऊंचाइयों पर देखना चाहती है, जिसकी कल्पना भी आज के समय में दुष्कर है। कुर्आन वह प्रकाश है जिसकी उपस्थिति में किसी अधंकार या गुमराही का इमकान बाकी नहीं रह जाता। शर्त यह है कि इसके आदेशों का अनुपालन पूरी ईमानदारी से किया जाए। अल्लाह हम सबको नेक अमली की तौफीक अता फरमाएं और उन बद आमालो से हमें बचाएं जो इन्सान को अंधेरे में ले जाते है।

संदर्भ

1. कुर्आन मजीद
2. हदीस अलबुखारी
3. कुर्आन सब के लिए : मौलाना मुहम्मद फारुक खाँ
4. इस्लाम का सन्देश : आला सैय्यद अबुल हसन